ओ३म्

प्यारा ऋषि

महर्षि दयानंद सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की
प्रेरणाप्रद घटनाओ पर आधारित चित्रकथाएं

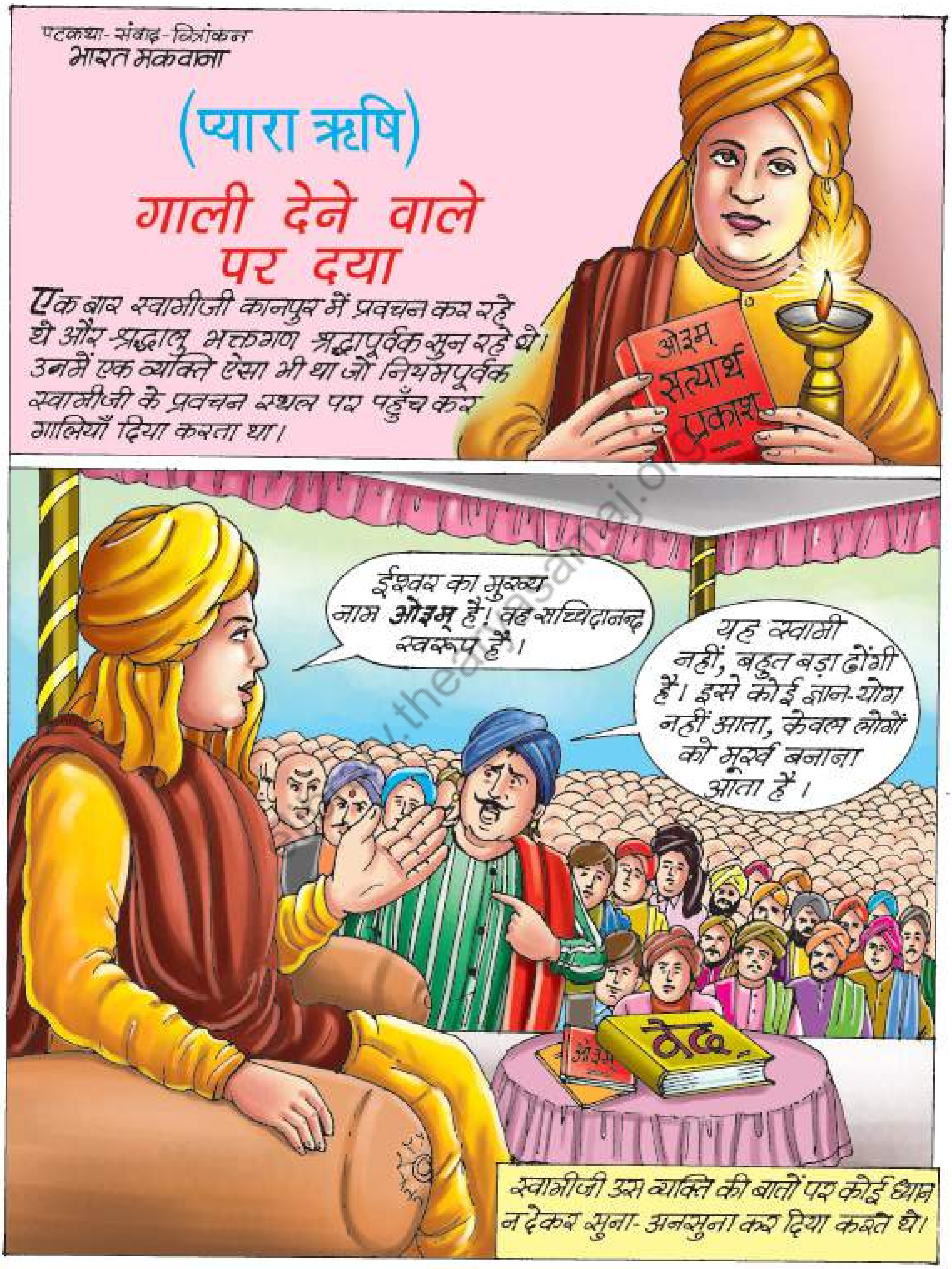
पटकथा- संवाद- चित्रांकन
भारत मकवाना
(प्यारा ऋषि)
गाली देने वाले पर दया
एक बार स्वामीजी कानपुर में प्रवचन कर रहे थे और श्रद्धालु भक्तगण श्रद्धापूर्वक सुन रहे थे। उनमें एक व्यक्ति ऐसा भी था जो नियमपूर्वक स्वामीजी के प्रवचन स्थल पर पहुँच कर गालियाँ दिया करता था।
ओ३म् सत्यार्थ प्रकाश
ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है। वह सच्चिदानन्द स्वरूप है।
यह स्वामी नहीं, बहुत बड़ा ढोंगी है। इसे कोई ज्ञान-योग नहीं आता, केवल लोगों को मूर्ख बनाना आता है।
वेद
स्वामीजी उस व्यक्ति की बातों पर कोई ध्यान न देकर सुना- अनसुना कर दिया करते थे।

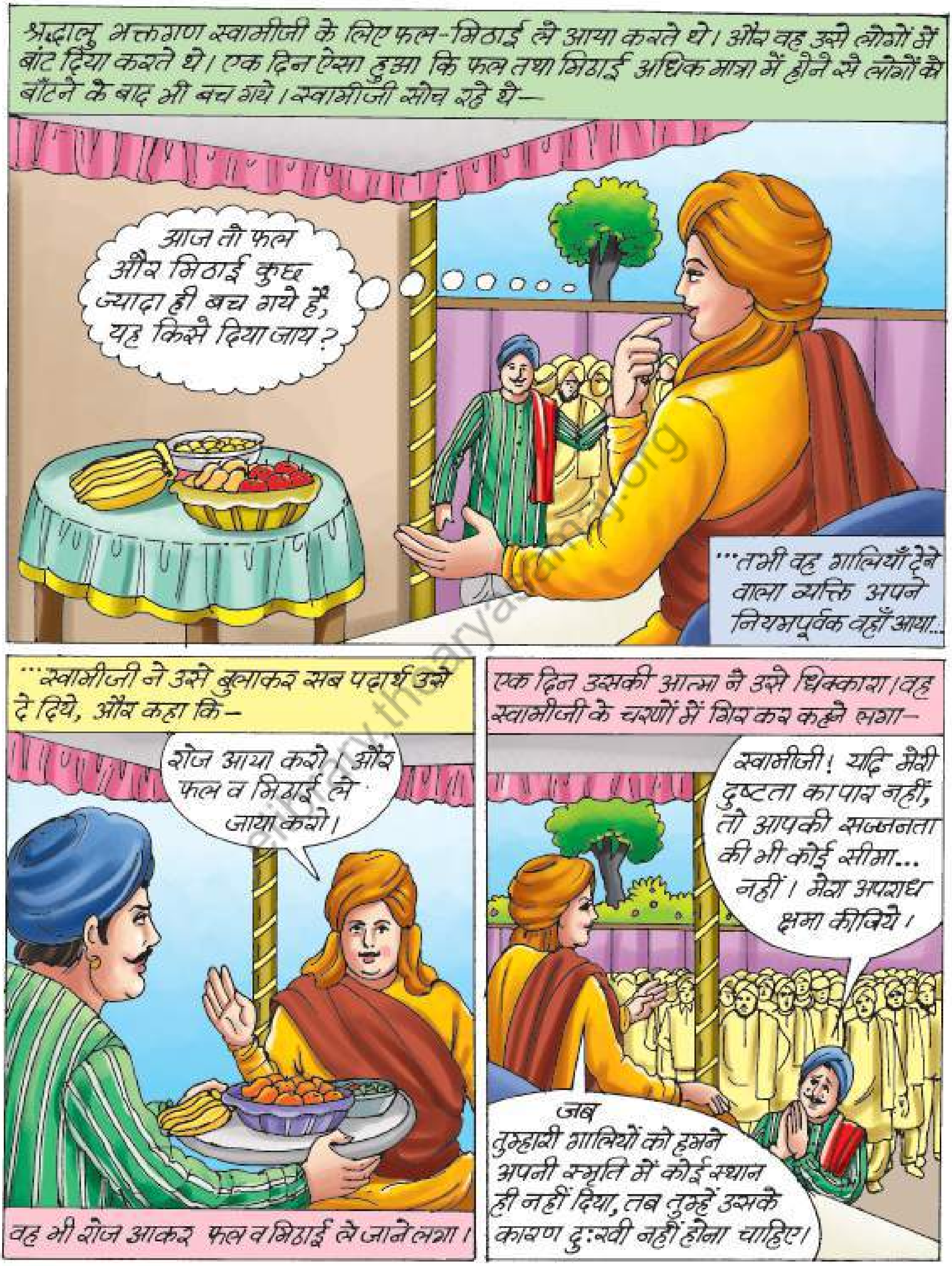

elibrary.thearyasamaj.org

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

स्वदेशी ही वस्तु अपनाने में शोभा

एक बार स्वामी जी अलीगढ़ में प्रवचन दे रहे थे। तभी 'ठाकुर ऊधोसिंह' छावला निवासी अपने पिता ठाकुर भूपाल सिंह के साथ स्वामीजी के दर्शन करने आये। उस दिन ऊधोसिंह के वस्त्र नये ढंग के थे और सब के सब विलायती कपड़ो के बने थे। यह देख स्वामीजी बोले—

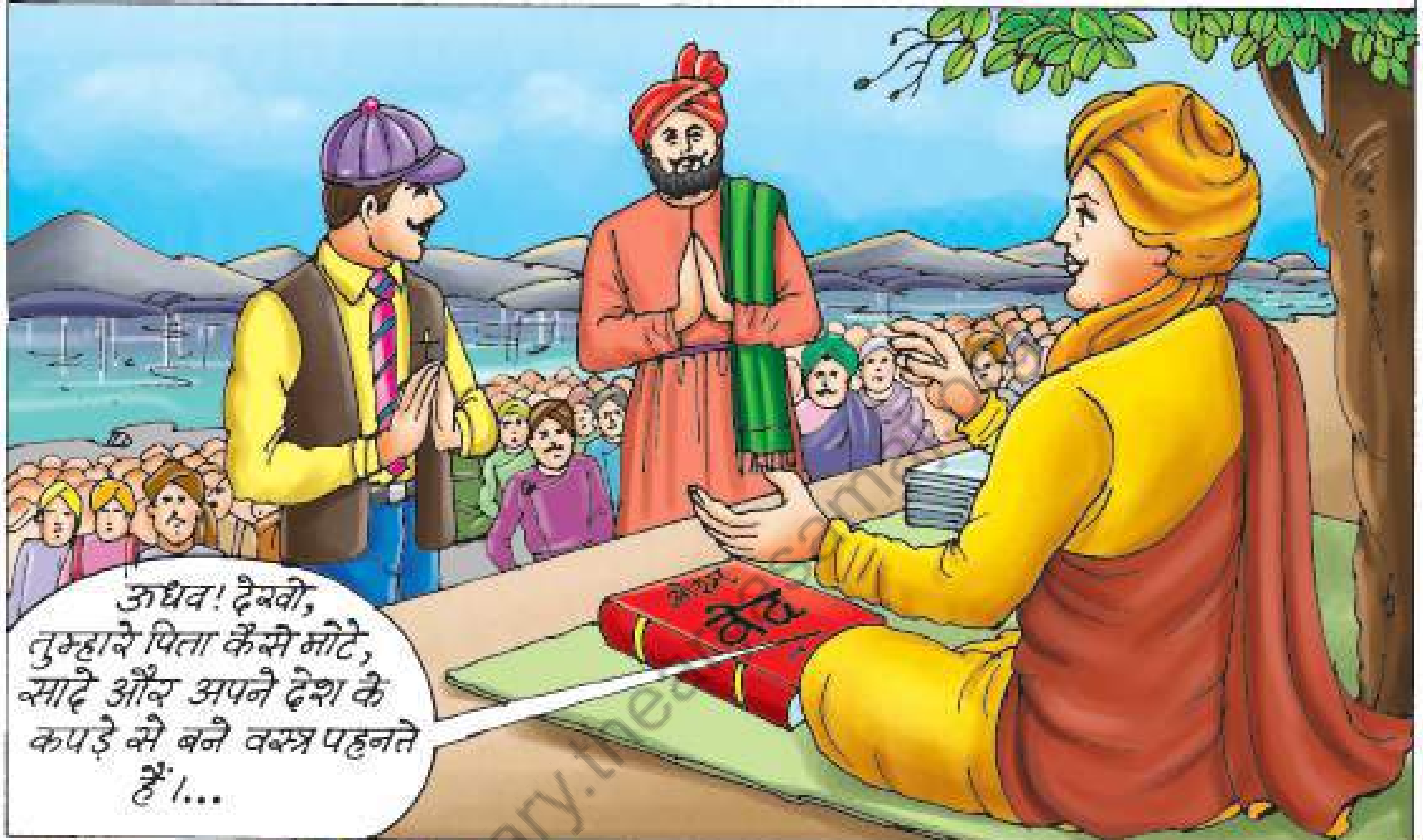

elibrary.thearyasamaj.org

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

जहर देने वाले की कैद से मुक्ति

स्वामीजी सभी वर्ग के लोगों के बीच समान रूप से उठते-बैठते थे। इसमें पंडित व समाज के अन्य लोग स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से बेहद क्रोधित थे।

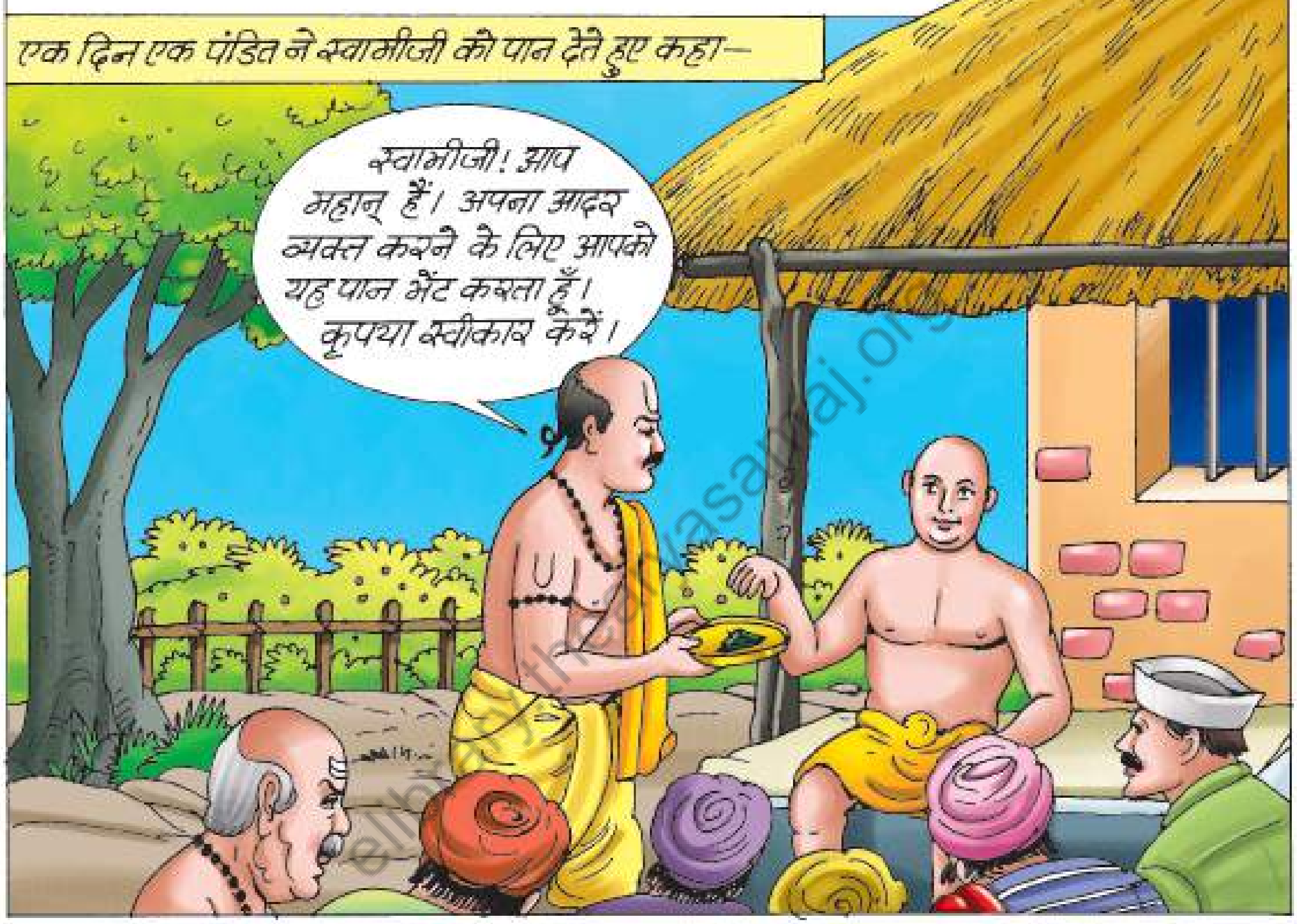

स्वामीजी की हत्या के इरादे से पान में जहर देने वाले अपराधी को शहर के तहसीलदार सय्यद मोह-म्मद ने जो स्वामीजी के भक्त बन गये थे कैद कर लिया।
अरे, बेशर्म ! स्वामीजी जैसे महापुरुष को तूने धोखे से ज़हर दिया, जो आज तुम्हारे हिन्दु धर्म के सबसे बड़े रक्षक हैं ।
इसे,स्वामीजी के पास ले चलो ।

ज़हर देने वाले अपराधी को जब स्वामीजी के सामने लाया गया–
तहसीलदार सैयद साहब ! इसे छोड़ दें। मैं तो लोगों को मुक्त कराने आया हूँ फिर इसे बंधन में कैसे डलवा दूँ ?
वाह ! स्वामीजी, जैसा आपका नाम है, वैसे ही आपके गुण हैं। आप दया के सागर हैं

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भरत मकवाना

उपासना धर्म का निरादर

elibrary.thearyasamaj.org

... उपासकों को खड़ा नहीं होना चाहिये। क्यों कि परमेश्वर से बड़ा कोई नहीं है। ऐसा करने से उपासना धर्म का निरादर होता है।
ओ३म्
आ समाज सत्सङ्ग सभ
(लाहौर)
महर्षि की इस बात को सबने स्वीकार किया और उनकी इस महानता से सब बहुत प्रभावित हुए।

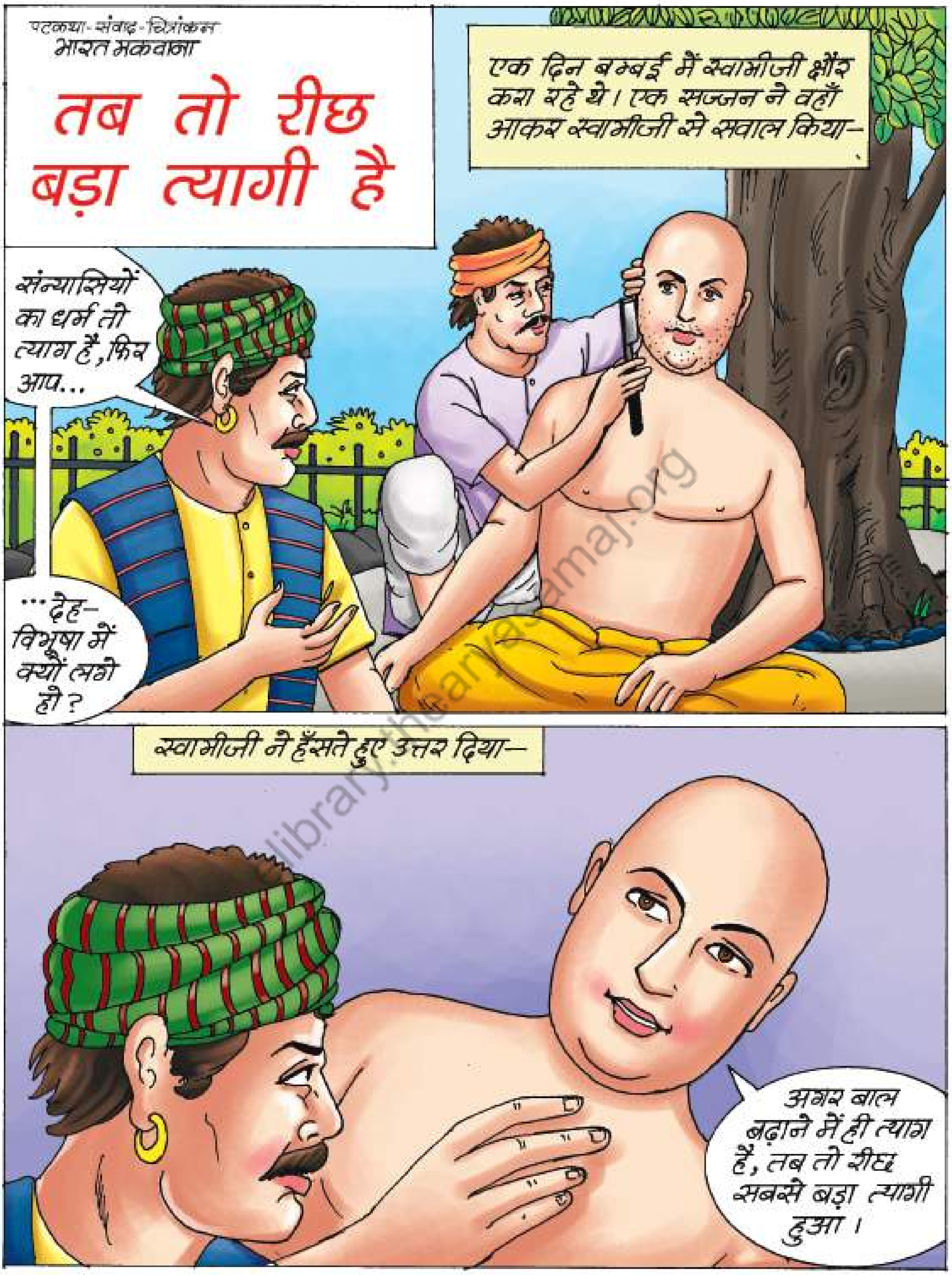
पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना
तब तो रीछ बड़ा त्यागी है
एक दिन बम्बई में स्वामीजी क्षौर करा रहे थे। एक सज्जन ने वहाँ आकर स्वामीजी से सवाल किया–
संन्यासियों का धर्म तो त्याग है, फिर आप...
...देह-विभूषा में क्यों लगे हो?
स्वामीजी ने हँसते हुए उत्तर दिया–
अगर बाल बढ़ाने में ही त्याग है, तब तो रीछ सबसे बड़ा त्यागी हुआ।

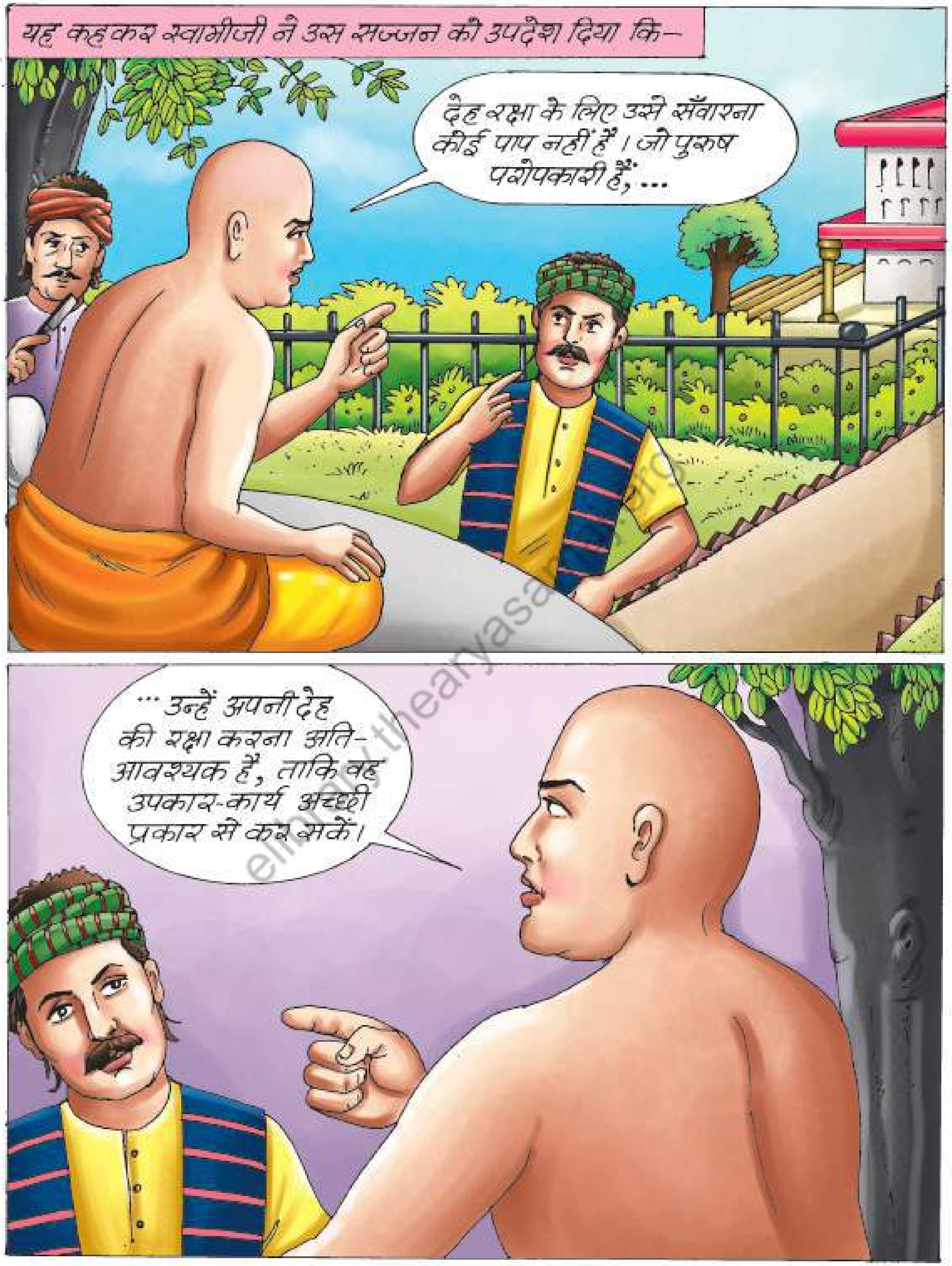
यह कहकर स्वामीजी ने उस सज्जन को उपदेश दिया कि-
देह रक्षा के लिए उसे सँवारना कोई पाप नहीं है। जो पुरुष परोपकारी हैं, ...
... उन्हें अपनी देह की रक्षा करना अति-आवश्यक है, ताकि वह उपकार-कार्य अच्छी प्रकार से कर सकें।

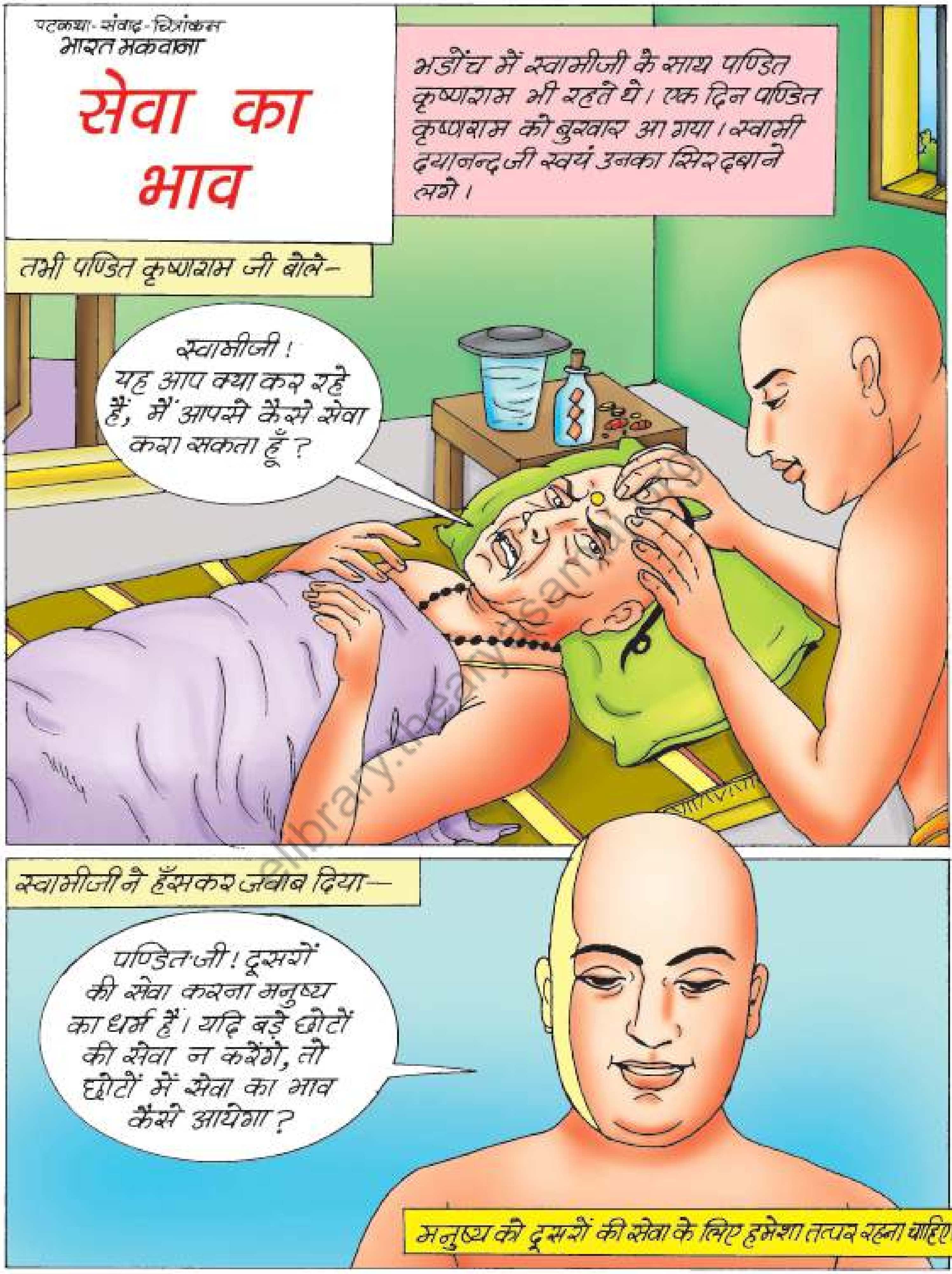
पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना
सेवा का भाव
भड़ौंच में स्वामीजी के साथ पण्डित कृष्णराम भी रहते थे। एक दिन पण्डित कृष्णराम को बुखार आ गया। स्वामी दयानन्द जी स्वयं उनका सिर दबाने लगे।
तभी पण्डित कृष्णराम जी बोले—
स्वामीजी! यह आप क्या कर रहे हैं, मैं आपसे कैसे सेवा करा सकता हूँ?
स्वामीजी ने हँसकर जवाब दिया—
पण्डित जी! दूसरों की सेवा करना मनुष्य का धर्म है। यदि बड़े छोटों की सेवा न करेंगे, तो छोटों में सेवा का भाव कैसे आयेगा?
मनुष्य को दूसरों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

सर सय्यद अहमद खां और हवन

elibrary.thearyasamaj.org

...दूर तक उसकी सुगन्ध जाती है, ऐसे ही हवन में डाली हुई सामग्री छिन्न-भिन्न होकर...
?

...वायु में फैल कर उसका सुधार कर देती है।
स्वामीजी के जवाब से सर सय्यद साहब का संशय दूर हो गया।

पटकथा - संवाद - चित्रांकन
भरत मकवाणा
ब्रह्मचर्य का बल
शक्ति मानसिक हो या शारीरिक, दोनों का स्थान हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण है। स्वामीजी अद्भुत बल के **धनी** थे, उन्होंने एक बार दो साँडों को लड़ते हुए छुड़ाया–
चलो! परेहटो।

ब्रह्मचर्य की शक्ति से ही कीचड़ में फंसी बैलगाड़ी निकाली।
स्वामी जी ने बैल खुलवाए और स्वयं बैलों के स्थान पर लगे और गाड़ी को बाहर निकाल दिया।

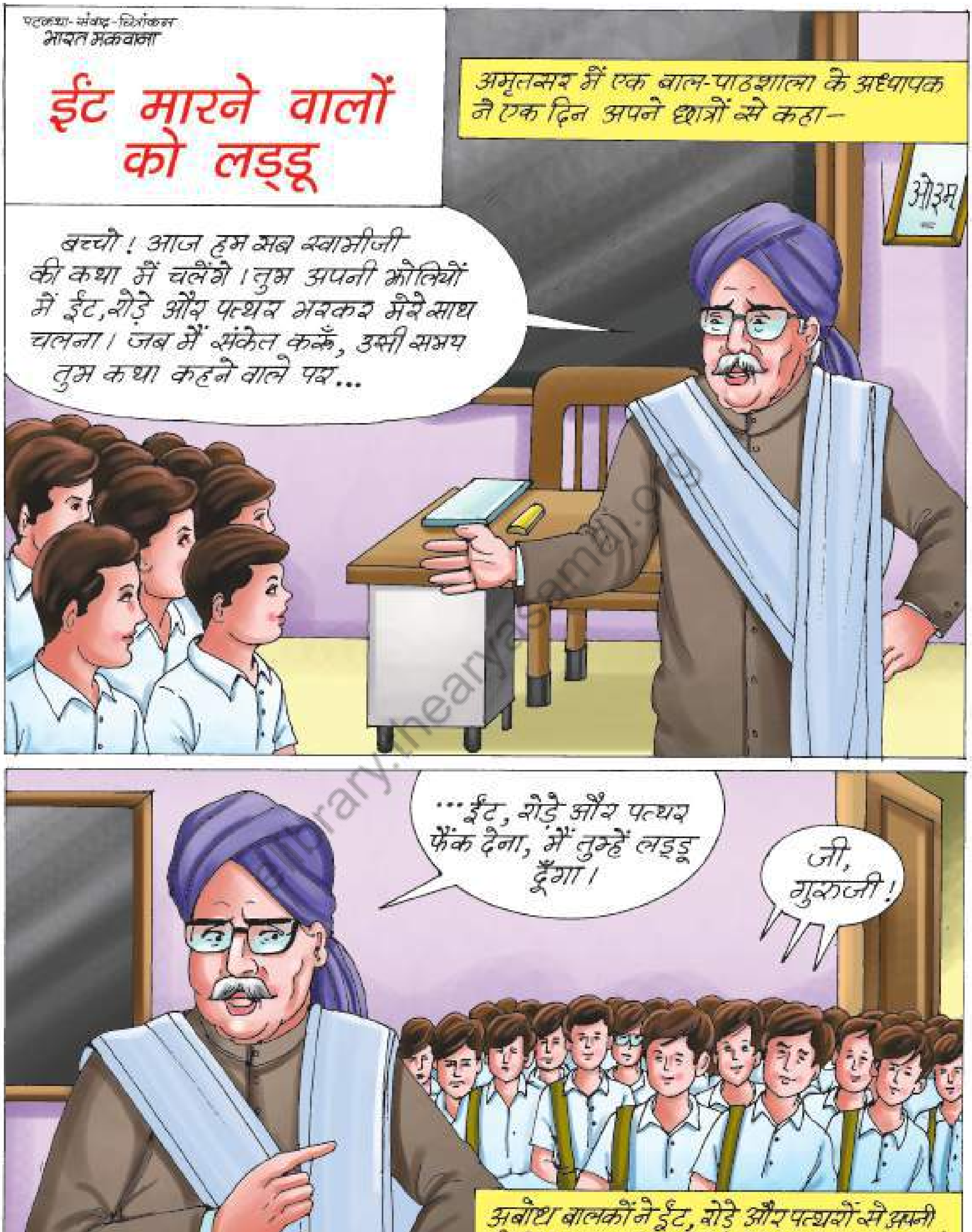

library.thearyasamaj.org

व्याख्यान रात्रि के आठ बजे समाप्त हुआ करता था। जब थोड़ा अँधेरा होने लगा तब अध्यापक का संकेत पाकर बालक स्वामीजी पर ईंट, रोड़े और पत्थर फैंकने लगे।
सभा में हल-चल मच गई।

स्वामीजी ने खड़े होकर सब को शान्त कर दिया।
शान्त हो जाओ। शान्त हो जाओ।।

elibrary.thearyasamaj.org

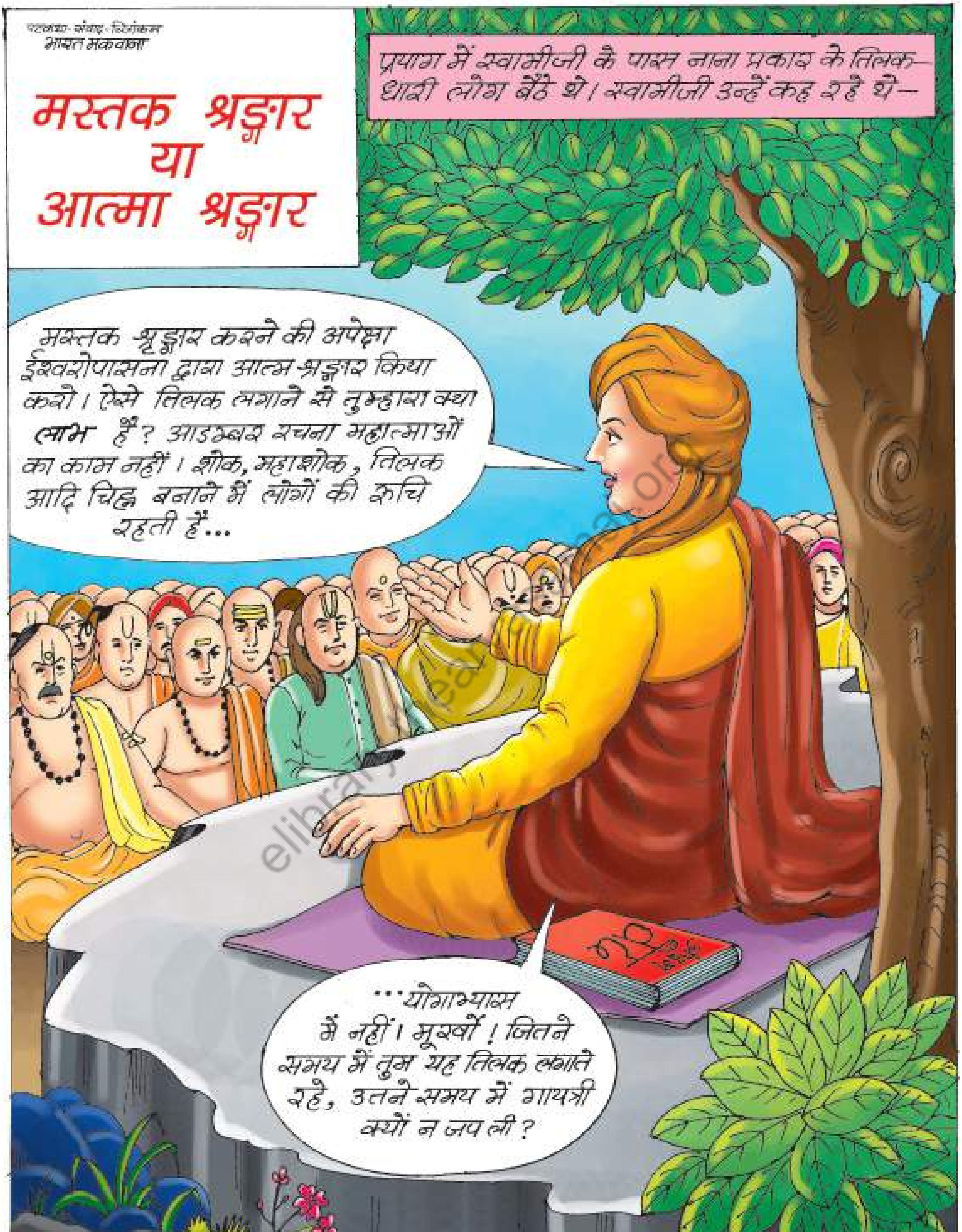
पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भरत मकवाणा
मस्तक श्रृङ्गार या आत्मा श्रृङ्गार
प्रयाग में स्वामीजी के पास नाना प्रकार के तिलक-धारी लोग बैठे थे। स्वामीजी उन्हें कह रहे थे—
मस्तक श्रृङ्गार करने की अपेक्षा ईश्वरोपासना द्वारा आत्म-श्रृङ्गार किया करो। ऐसे तिलक लगाने से तुम्हारा क्या लाभ है? आडम्बर रचना महात्माओं का काम नहीं। शैव, महाशैव, तिलक आदि चिह्न बनाने में लोगों की रुचि रहती है...
...योगाभ्यास में नहीं। मूर्खों! जितने समय में तुम यह तिलक लगाते रहे, उतने समय में गायत्री क्यों न जप ली?

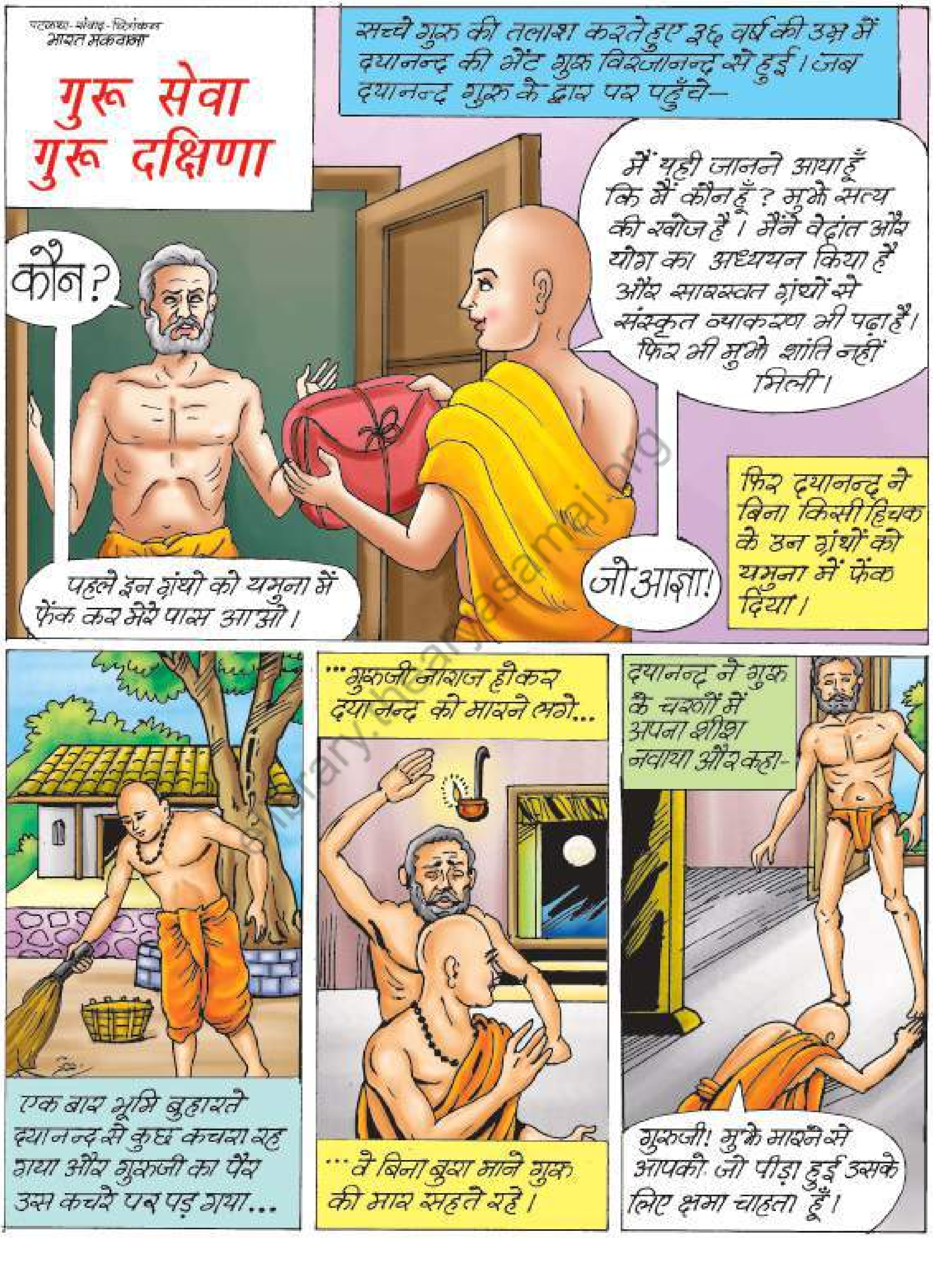

library.thearyasamaj.org

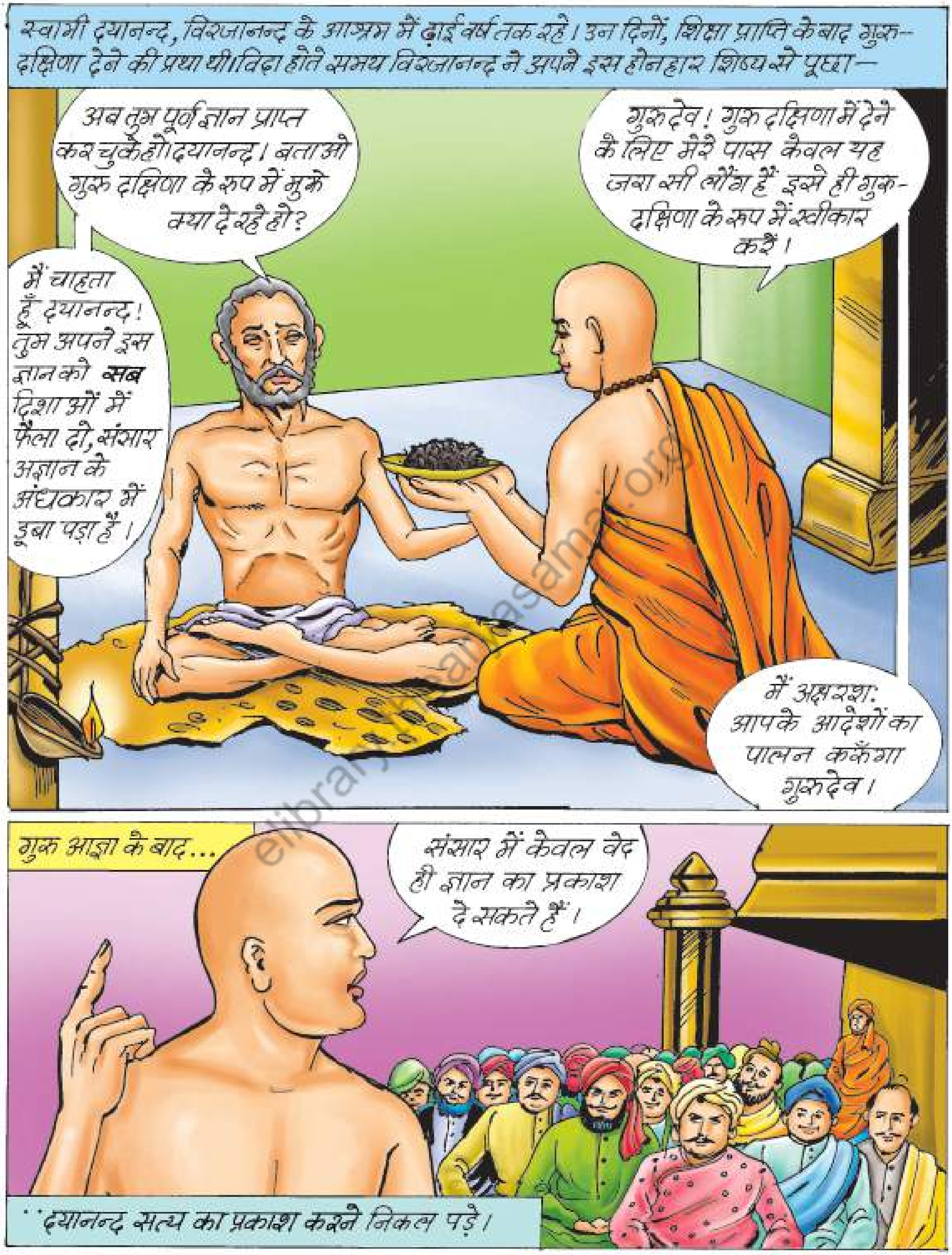

elibrary.aryasamaj.org

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भरत मकवाणा
मूर्ति पूजा पाखण्ड है।
अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद गुरु आज्ञा से दयानन्द हरिद्वार के 'कुंभ मेले' में प्रवचन कर रहे थे। जब मूर्ति पूजा खण्डन की बात आयी तो कुछ लोग इस बात से सहमत थे और कुछ विरोधी भी थे।
मित्रों, बन्धुओं! संसार में केवल वेद ही ज्ञान का प्रकाश दे सकते हैं...
...मूर्तिपूजा पाखण्ड है। वेदों में मूर्ति पूजा का विधान नहीं है। वेदों के पठन-पाठन का अछूतों और महिलाओं, सबको बराबर अधिकार है।
स्वामीजी की बातों से कुछ लोग सहमत थे, और कुछ असहमत थे।
ये पंडे-पुरोहित अपना हित साधने के लिए तुम्हें अज्ञान के अंधेरे में रखते...
...हैं। उनकी बातें मत सुनो।

दयानन्द की बातों से असहमत लोग पथराव करने और नारे लगाने लगे।
अरे! यह क्या बकवास कर रहा है?
यह तो ईश्वर की निंदा कर रहा है,इसे मारो।

दयानन्द ने लोगों के सब प्रहार अपनी पत्थर जैसी छाती पर सहे। यह देख विरोधी दल के लोग भी हक्के-बक्के रह गये।
वाह! कितना साहसी और बहादुर है।
सत्य के प्रचार और समाज-सुधार के लिए स्वामी जी ने क्या कुछ नहीं सहा?

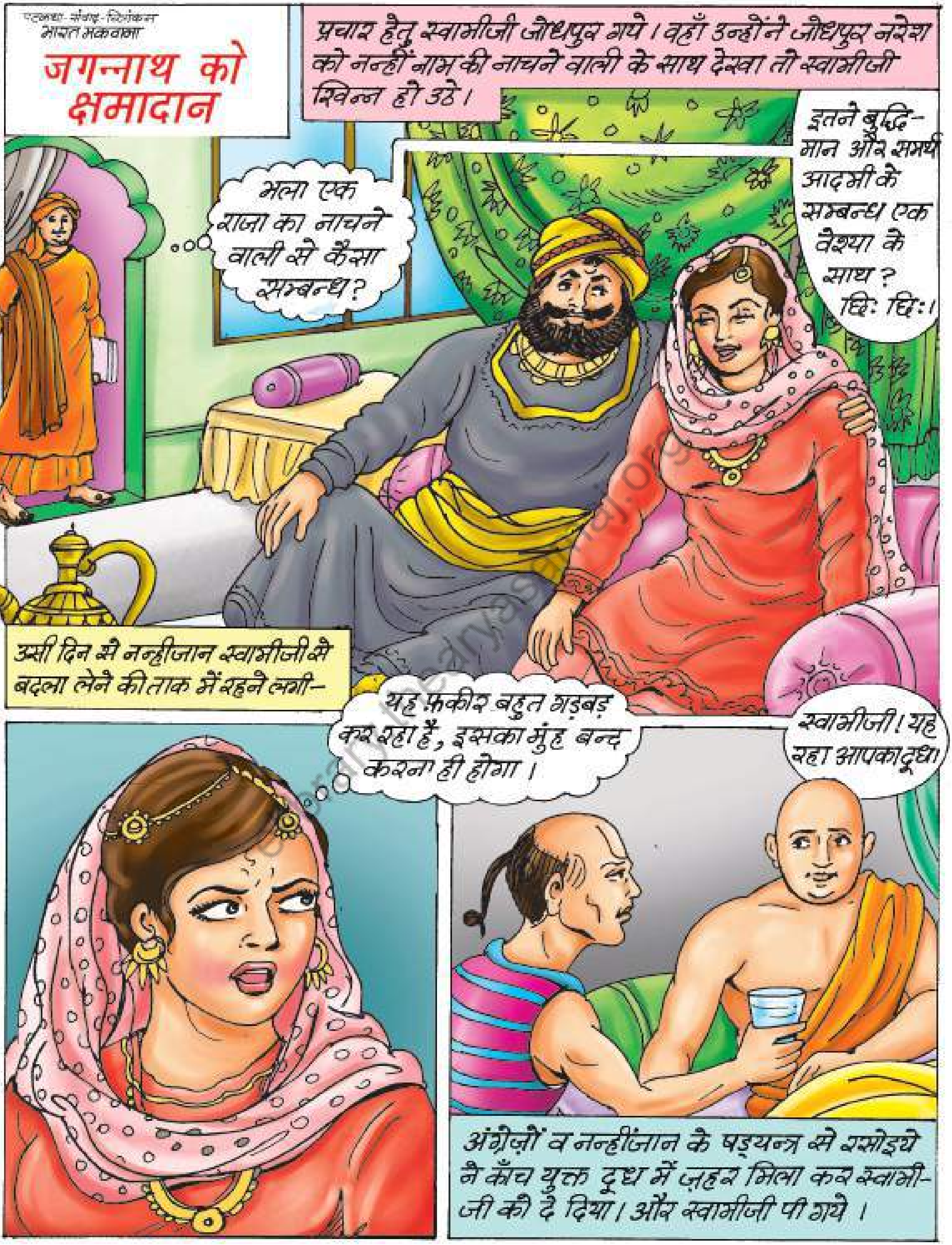

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भरत मकवाणा
जगन्नाथ को क्षमादान
प्रचार हेतु स्वामीजी जोधपुर गये। वहाँ उन्होंने जोधपुर नरेश को नन्हीं नाम की नाचने वाली के साथ देखा तो स्वामीजी खिन्न हो उठे।
भला एक राजा का नाचने वाली से कैसा सम्बन्ध?
इतने बुद्धिमान और समर्थ आदमी के सम्बन्ध एक वेश्या के साथ? छिः छिः।
उसी दिन से नन्हीजान स्वामीजी से बदला लेने की ताक में रहने लगी–
यह फ़कीर बहुत गड़बड़ कर रहा है, इसका मुंह बन्द करना ही होगा।
स्वामीजी! यह रहा आपका दूध।
अंग्रेज़ों व नन्हींजान के षड्यन्त्र से रसोइये ने काँच युक्त दूध में ज़हर मिला कर स्वामीजी को दे दिया। और स्वामीजी पी गये।

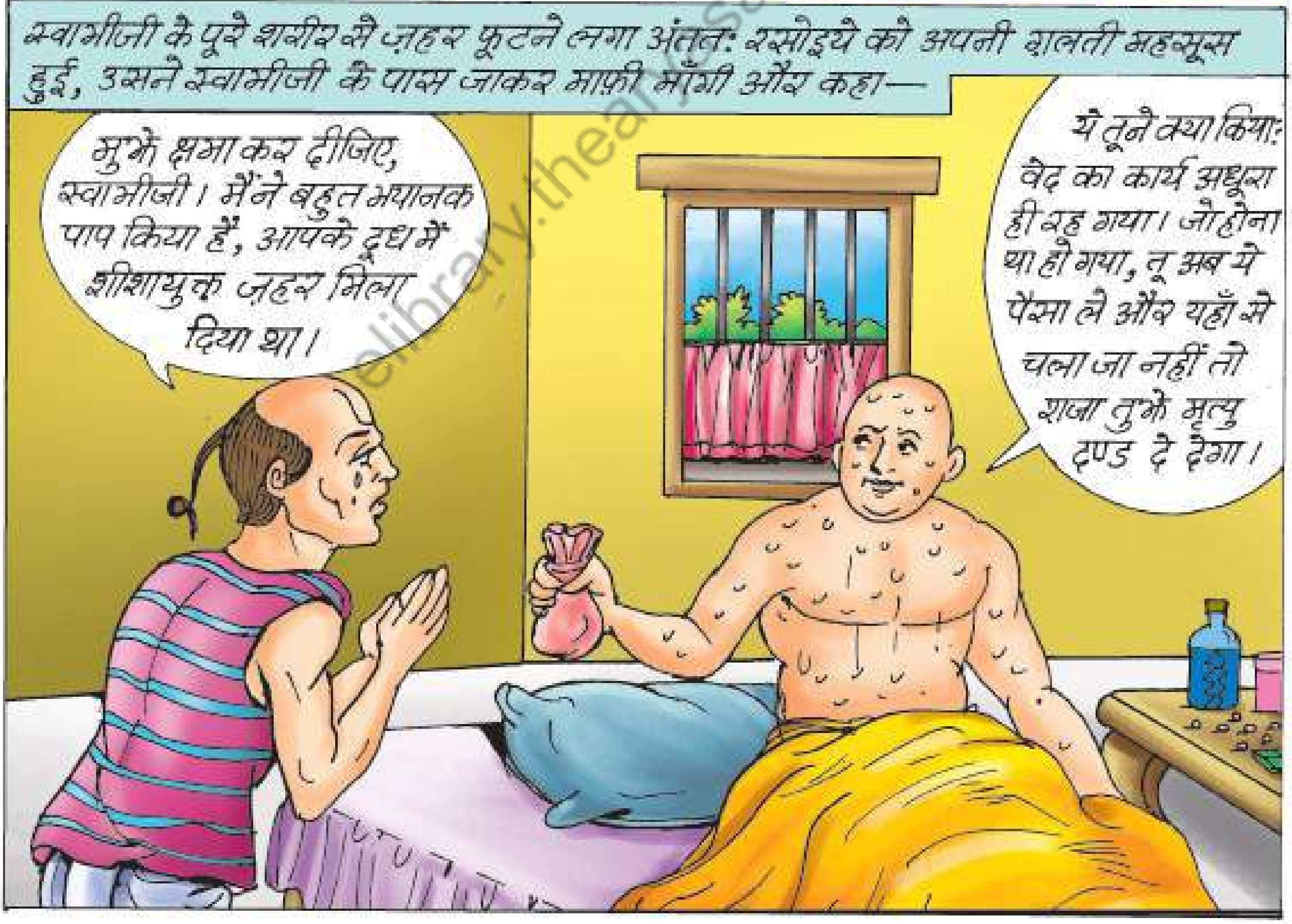

elibrary.thearyasamaj.org

मनुष्य की मनुष्यता

elibrary.thearyasamaj.org

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भरत मकवाणा

स्त्रियों के मुख्य धर्म

एक बार स्वामीजी भडोंच में वाणी द्वारा अमृत वर्षा कर रहे थे। तभी बहुत से भार्गव ब्राह्मण और स्त्रियां स्वामीजी का उपदेश सुनने आए। स्त्रियों में अधिक संख्या अद्वैतानन्द कि चेलियों की थी। स्वामीजी स्त्रियों से वार्तालाप करना नहीं चाहते थे, पर उनके विशेष आग्रह पर एक पर्दा अपने और उनके बीच डालकर उन्हें उपदेश दिया—

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

ईसाई और पुनर्जन्म

एक बार स्वामीजी लुधियाना में प्रवचन दे रहे थे। उसी समय दो ईसाई प्रवचन स्थल पर आये और स्वामीजी से पुनर्जन्म होता है या नहीं, उस पर शंङ्का की।

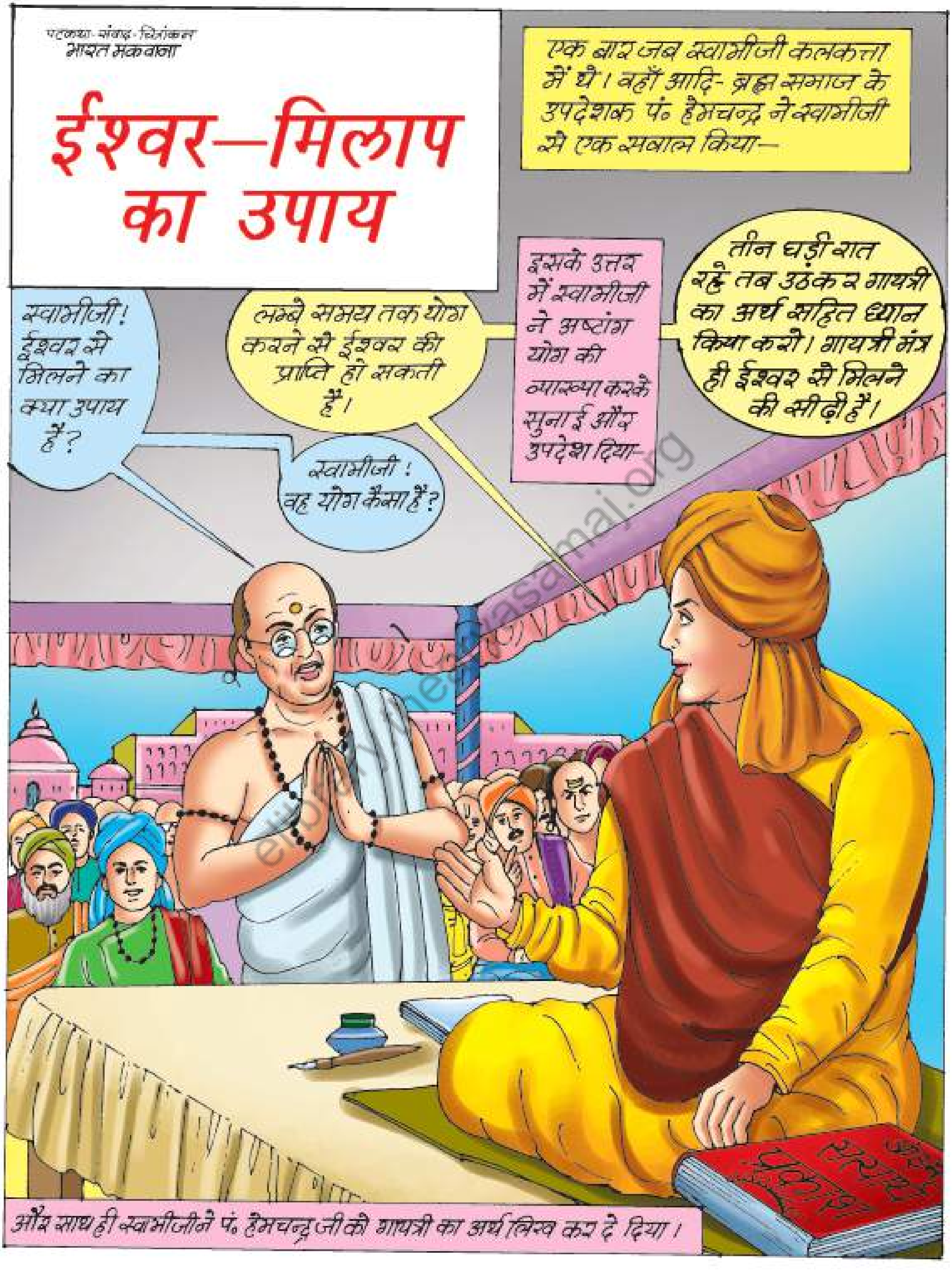
पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाणा
ईश्वर—मिलाप का उपाय
एक बार जब स्वामीजी कलकत्ता में थे। वहाँ आदि-ब्रह्म समाज के उपदेशक पं० हेमचन्द्र ने स्वामीजी से एक सवाल किया—
स्वामीजी! ईश्वर से मिलने का क्या उपाय है?
लम्बे समय तक योग करने से ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।
स्वामीजी! वह योग कैसा है?
इसके उत्तर में स्वामीजी ने अष्टांग योग की व्याख्या करके सुनाई और उपदेश दिया—
तीन घड़ी रात रहे तब उठकर गायत्री का अर्थ सहित ध्यान किया करो। गायत्री मंत्र ही ईश्वर से मिलने की सीढ़ी है।
और साथ ही स्वामीजीने पं० हेमचन्द्र जी को गायत्री का अर्थ लिख कर दे दिया।

हमारे अन्य प्रेरक कॉमिक्स